१०--स्तनपान कब लाभदायी नहीं

स्तनपान शिशु के लिए उत्तम एवं आवश्यक है लेकिन निम्न परिस्थितियां अपवाद हैंः

जब माता विशेष प्रकार की दवा का सेवन करती होः

सामान्य बीमारियों की दवा का असर माता के दूध में नहीं के बराबर होता है। गंभीर अथवा जटिल बीमारी जैसे कैंसर की दवा, एंटीबायोटिक टेट्रासाइक्लिन, क्लोरेमफेनिकोल, थाइराइड ग्रंथि की बीमारी के लिए दवा, विशेष प्रकार की स्टीरोइड दवा, रक्त का थक्का जमने के लिए उपयोग में ली गई दवा का सेवन करना हो तो चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

स्तनपान कराने वाली माता को जब भी दवा की जरूरत पड़े तो अवश्य ही चिकित्सक की सलाह लें। ऊपर लिखी हुई दवाएं दूध के सहारे शिशु को हानी पहुंचा सकती हैं।

स्तन तथा माता की बीमारीः

किसी कारण स्तन पक जाए तो उस स्तन से शिशु को दूध ना पिलाएं। दूसरे स्तन से अवश्य दूध पिलाएं। माता ज्यादा बीमार हो, उसे गंभीर मानसिक बीमारी हो, ऐसी स्थिति में स्तनपान कराने की सलाह नहीं दी जाती है, लेकिन स्तन से किसी पात्र में दूध निकालकर शिशु को पिलाया जा सकता है।

यदि माता को हिपेटाइटिस 'बी' श्रेणी का पीलिया (जोंडिस) तथा एईड्स जैसी बीमारी हो तो शिशु को माता का दूध नहीं देना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने भारत जैसे अर्द्धविकसित देशों में इन बीमारियों की स्थिति में भी स्तनपान कराने की सलाह दी है। माता स्वयं बीमारी के कारण काफी कमजोर हो गई हो तो शिशु को दूध ना पिलाना माता के हित में है।

जब शिशु स्तनपान करने में सक्षम ना होः

शिशु सक्षम ना हो तो स्तनपान नहीं कराएं। जब शिशु दुर्बल हो, समय से पूर्व पैदा हुआ हो अथवा होठ-तालु या अन्न नली विकसित नहीं हुआ हो ऐसी परिस्थिति में माता का दूध नली द्वारा पेट में उतारा जाता है। किसी कारण शिशु तेजी से सांस ले रहा हो तो दूध नहीं पिलाएं। ऐसे में शिशु को न्युमोनिया होने का डर रहता है।